सिनेह आखर

(गजल आ रुबाइ संग्रह)

जगदानन्द झा 'मनु'

सिनेह आखर

(गजल आ रुबाइ संग्रह)

जगदानन्द झा 'मनु'

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SINEH AKHAR

A Maithili Ghazal and Rubai Collection by Shri Jagdanand Jha 'Manu'

Sineh Akhar is a Maithili collection of seventy-eight ghazals and forty-two rubais by Shri Jagdanand Jha 'Manu', published in 2026 by Pallavi Prakashan. Rooted in the classical discipline of metre yet voiced in everyday Maithili, the book turns affection, longing, memory, and companionship into intimate lyrical speech.
Love remains the collection's central pulse, appearing as first attraction, conjugal devotion, separation, waiting, hurt, remembrance, and hope. The poems also open toward parental affection, migration, village experience, faith, social inequality, hollow religiosity, corrupt politics, unemployment, and the pressures of contemporary life, allowing personal emotion to meet the wider world with clarity.
Across several established ghazal metres, 'Manu' sustains refrain, rhyme, cadence, and the self-signing maqta while keeping expression direct and singable. His images come from eyes, smiles, clouds, rain, fields, village paths, empty homes, letters, wine, wounds, and waiting. The rubais compress similar experiences into four-line reflections, moving from romantic playfulness and sorrow to family, society, literature, labour, and moral unease in changing times.
Sineh Akhar thus becomes a lyrical conversation in which love speaks privately while remaining alert to life beyond itself.

Published by: Pallavi Prakashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward no. 06, Nirmali, District: Supaul, Bihar: 847452

First Edition: 2026
ISBN: 978-93-48865-86-1
Price: 299/-
Copyright: © Author (Shri Jagdanand Jha 'Manu')

Printed by: Manav Art (Pallavi Prakashan)
Typesetting: Dr. Umesh Mandal, umeshberma@gmail.com
Cover Design: Mrs. Poonam Mandal, Nirmali, Supaul, Bihar- 847452

Website: http://pallavipublication.blogspot.com
Email: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: +91 99316 54742, +91 62006 35563
Font Source: Google Fonts

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, distributed, transmitted, adapted, paraphrased, stored in a retrieval system, or processed in any form or by any means, including electronic, mechanical, digital, or artificial intelligence systems, without the prior written permission of the copyright holder or the publisher.

समर्पण

ई गजल आ रुबाइ संग्रह ‘सिनेह आखर’ ससिनेह समर्पित अछि हमर प्रियतमा, हमर संगिनी, हमर घरनी, जे सदिखन हमर अंतरमनमे वास करैत छथि। हुनक मधुर सिनेह जे हमरा गजलगोहि बना देलनि।

दू आखर

सादर प्रणाम। हमर पहिल गजल-संग्रह 'नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर'केँ अपने सभक जे अगाध सिनेह, आदर आ आशीर्वाद भेटल, ओकर कृतज्ञता शब्दमे व्यक्त करब सहज नहि अछि। ओहि अपूर्व प्रेरणा आ संबलक बदौलत हम एक बेर फेर अपने सभक सोझाँ अपन दोसर गजल आ रुबाइ-संग्रह 'सिनेह आखर' लऽ कऽ उपस्थित भऽ रहल छी। पहिल संग्रहक बाद लिखल रचनासभमे जे अनुभव, भाव आ प्रश्न क्रमशः आकार लैत गेल, ई पोथी ओहि सभकेँ समेटबाक प्रयास अछि।

सामान्यतः कहल जाइत अछि, 'गजल मने प्रेम'। प्रेम निश्चय गजलक मूल संवेदना रहल अछि आ 'सिनेह आखर'क केन्द्रमे सेहो सिनेह, प्रेम, विरह, वफ़ा-बेवफ़ाई आ नायक-नायिकाक शृंगारिक भाव प्रमुख रूपेँ उपस्थित अछि। संग्रहक अधिकांश गजल प्रेमी-प्रेमिकाक मनोदशा, मिलन-वियोग, प्रतीक्षा, स्मृति आ सम्बन्धक कोमल-अकोमल अनुभवकेँ स्वर दैत अछि। तथापि किछु गजल ऐ परिचित प्रेम-वृत्तसँ बाहर सेहो जाइत अछि, जेतए सिनेहक अर्थ व्यापक भऽ जाइत अछि। केतौ शराब-ताड़ीक सामाजिक प्रसंग सामने अबैत अछि, तँ केतौ बाबू-मायक प्रति ममता, आदर आ आत्मीयता अभिव्यक्त होइत अछि। एहि अर्थमे 'सिनेह आखर' प्रेमक संग्रह अवश्य अछि, मुदा प्रेमकेँ केवल नायक-नायिकाक सम्बन्ध धरि सीमित नहि रखैत, ओकर किछु आन मानवीय रूपकेँ सेहो स्पर्श करैत अछि।

मुदा एहि संग्रहक मूल स्वर सिनेहक अछि। समर्पण-पृष्ठपर नजरि पड़िते पाठक बुझि जेताह जे ई पोथी हमर प्रियतमा, संगिनी आ घरनीकेँ समर्पित अछि। जीवनक संग-साथमे भेटल प्रेम केवल उल्लास नहि दैत अछि; ओ प्रतीक्षा, मान-

मनौअल, समर्पण, स्मृति, असुरक्षा, पीड़ा आ वियोगक अनुभवसँ सेहो गुजरैत अछि। एहि संग्रहक अधिकांश गजल आ रुबाइ प्रेमक एहि बहुरंगी यात्राकेँ स्वर दैत अछि। कखनो प्रियक आँखि, मुस्की वा आँचर सिनेहक बिम्ब बनैत अछि, तँ कखनो खाली घर, नमहर राति, नोर, घाव आ बाट तकैत मोन वियोगक भाषा बनि जाइत अछि। 'सिनेह आखर' शीर्षक एहि कारण राखल गेल जे एहि रचनासभक प्रत्येक आखरक भीतर सिनेहक कोनो ने कोनो रूप धड़कैत अछि।

संग्रह दू भागमे अछि। पहिल भागमे अठहत्तरि गजल अछि, जे भिन्न-भिन्न बहरमे रचल गेल अछि। दोसर भागमे बयालीस रुबाइ राखल गेल अछि। गजल लिखैत काल बहर, काफिया, रदीफ आ विधागत अनुशासनक ध्यान रखबाक यथासम्भव प्रयास कएल अछि, मुदा संगहि ईहो चाहल अछि जे भाषा सहज रहए, भाव पाठक धरि सीधा पहुँचए आ मैथिलीक अपन मिठास बनल रहए। रुबाइसभमे चारि पाँतिक सीमित आकारक भीतर एकटा पूर्ण भाव वा अनुभवकेँ सघन करबाक प्रयास अछि।

प्रेम-केन्द्रित रचनासभक बीच बाबूजीक सिनेह, गाम-घरक स्मृति, महानगरक विवशता, साहित्यक स्थिति, श्रमशील लोकक संघर्ष, व्यवस्थापर प्रश्न आ समाजक बदलैत मूल्य सेहो अभिव्यक्त भेल अछि। एकरा कोनो योजनाबद्ध विषय-सूची जकाँ नहि, अपितु जीवनक बीच-बीचमे उठैत अनुभूति जकाँ पढ़ल जाए। हम जे देखलहुँ, भोगलहुँ, सुनलहुँ वा मोनमे अनुभव कएलहुँ, तेकरा गजल आ रुबाइक अनुशासनमे बाँधबाक प्रयास केलहुँ अछि। पाठक जँ एहि पाँतिसभमे अपन प्रेम, अपन दुख, अपन प्रतीक्षा वा अपन समयक कोनो परिचित छवि देखथि, तँ हमर लेखन सार्थक होएत।

रचना प्रकाशन धरि पहुँचैत-पहुँचैत अनेक लोकक सिनेह आ सहयोग ग्रहण करैत अछि। मैथिलीक समस्त सुधी पाठक, सोशल मीडियापर सक्रिय मैथिली-साहित्य आ गजल-अनुरागी मित्र-मण्डली तथा ओ सभ व्यक्ति, जिनकासँ हम दिन-प्रतिदिन किछु ने किछु सिखैत रहलहुँ, सभक प्रति हृदयसँ आभार। विशेष रूपसँ पूज्य गुरुवर श्री आशीष अनचिन्हारजीक आत्मीय प्रोत्साहन आ अनवरत मार्गदर्शनक लेल नतमस्तक छी। पोथीकेँ प्रकाशन-रूप

देबाक लेल पल्लवी प्रकाशन तथा एकर रूप-सज्जा आ निर्माणसँ जुड़ल सभ सहयोगीक प्रति सेहो कृतज्ञ छी।

हमरा अपन रचनाक सामर्थ्यक संग ओकर सीमा सेहो बुझल अछि। तँइ एहि पोथीकेँ अन्तिम उपलब्धि नहि, सृजन-यात्राक एक पड़ाव मानैत छी। अपने सभक रचनात्मक सुझाव, निष्पक्ष आलोचना, दुलार आ शुभाशीष आगूक लेखनकेँ दिशा देत। एहि विश्वासक संग 'सिनेह आखर' अपने सभक हाथमे सौंपि रहल छी।

अपनेक -

जगदानन्द झा 'मनु'

ई-मेल: jagdanandjha@gmail.com

मोबाइल/व्हाट्सऐप: 91 9212-46-1006

अनुक्रम

भाग 1, गजल

1 सँ 6 गजल, बहरे असम
7 गजल, बहरे कबीर
8 सँ 11 गजल, बहरे करीब
12 सँ 20 गजल, बहरे कलीब
21 सँ 23 गजल, खफीक
24 गजल, बहरे गोविंद
25 सँ 29 गजल, बहरे जदीद
30 आ 31 बहरे मीर
32 सँ 34 गजल, बहरे मुतकारिब
35 सँ 37 गजल, बहरे मुतदारिक
38 गजल, बहरे मजरिअ
39 गजल, मुजस्सम वा मुजास
40 आ 41 गजल, बहरे मुशाकिल
42 गजल, बहरे रजज
43 सँ 45 गजल, बहरे रमल
46 आ 47 गजल, बहरे विदेह
48 सँ 50 गजल, बहरे सगीर

51 गजल, बहरे सरीअ
52 आ 53 गजल, बहरे सलीम
54 सँ 62 गजल, बहरे हजज
63 गजल, बहरे हमीम
64 सँ 78 गजल, समान वर्णवृत

भाग 2, रूबाइ

1

ई कमल सन नजरि जे लाजे झुकल अछि
प्राण लेलक हमर जे आँचर खसल अछि

देखलहुँ मोहिनी रूपक छवि जखन हम
भेल पहिनेसँ मनमे जेना बसल अछि

हम दुनू मिल जँ जीवनमे संग चलबै
प्रेम जग देखतै मनमे जे सजल अछि

सत कहै छी अहाँकेँ हम मानियो लिअ
बिन अहाँ सुन्न सगरो जीवन बनल अछि

मीत मोनक अहीं हम्मर सात जन्मसँ
हाँ सजन केर सुनि ली तेँ 'मनु' बचल अछि

(बहरे असम, मात्राक्रम : 2122-1222-2122)

2

हाथमे हाथ लेने सगरो चलब हम
आब तोहर बिना पल भरि नहि जियब हम

हो सुखद की कतेको अन्हार जीबन
बनि क छाहैर तोहर संगहि रहब हम

दीप नेहक मिझेए नहि आब कखनो
बनि क बाती सिनेहे हरदम जरब हम

अछि हँसी ई सरस निश्छल बड्ड मोहक
नेह भरि-भरि करेजा तोहर गहब हम

छोड़ि दुनिया कतौ नहि 'मनु' आब जायब
आँखिकेँ तोर सोझाँ एतहि मरब हम

(बहरे असम, मात्राक्रम : 2122-1222-2122)

3

रूसि असगर किए चललौं हिय लगा लिअ
आउ चलि संग हमरो अप्पन बना लिअ

नहि बचन देब हम नहि किछु मोल एकर
संग हमरा ल मोनक संसय हटा लिअ

छोड़ि सगरो शिकाइत संगे चलब हम
प्राण छी हम अहाँकेँ हमरो मना लिअ

बारि दुनिया अहींपर छोड़लौं सभकिछु
जीव कोना अहाँ बिन चितमे बसा लिअ

जुनि बुझू आन जगमे सपनोसँ कखनो
मीत बुझि 'मनु' करेजसँ आबो सटा लिअ

(बहरे असम, मात्राक्रम : 2122-1222-2122)

4

हम जँ पीलहुँ शराबी कहलक जमाना
टीस नहि दुख करेजक बुझलक जमाना

भटकलहुँ बड्ड भेटेए नेह मोनक
देख मुँह नहि करेजक सुनलक जमाना

छल कपारक लिखल ई कोना कहू की
आँखि रहितो हमर सुख छिनलक जमाना

नहि हमर दोष नहि ककरो आर कहियौ
देख हारैत हमरा हँसलक जमाना

दर्द भेटल बुझब नहि 'मनु'कें कनी छल
आन अनकर कखन दुख जनलक जमाना

(बहरे असम, मात्राक्रम : 2122-1222-2122)

5

साँप चलि गेल लाठी पीटे रहल छी
बाप मुइला पछाइत भोजक टहल छी

पानि नै अन्न कहियो जीवैत देबै
गाम नोतब सराधे केकर कहल छी

पानि आँखिक सभक दुनियामे मरल अछि
लाज भरना द हम ताड़ीमे बहल छी

केकरा हम हिया अप्पन खोलि कहबै
लोक खातिर अनेरे धेने जहल छी

सुनि क हम्मर गजल जग पागल बुझैए
दर्द मुस्कीसँ झपने 'मनु' सभ सहल छी

(बहरे असम, मात्राक्रम : 2122-1222-2122)

6

प्रेम जिनकासँ छल ओ मुँह मोरि लेलनि
नेग दर्दक द झट नाता तोरि लेलनि

ओ हमर दर्दकेँ हँसि खिल्ली उड़ाकय
छोरि आनसँ किए नाता जोरि लेलनि

प्रेम केनाइ की बुझता निर्दयी ओ
जे हृदय केकरो छनमे कोरि लेलनि

सीखता की चलब नेहक फूलपर ओ
संग चलनाइ शूलक जे छोड़ि लेलनि

'मनु' अनाड़ी कपट छलकेँ चिन्हलक नहि
मोन नहि ओ करेजोकेँ झोरि लेलनि

(बहरे असम, मात्राक्रम : 2122-1222-2122)

7

हमरा प्रेम करु सदिखन बसन्ती पिया
नहि बाबूक हम यौ आब रहलहुँ धिया

बड़ अनमन सँ सोलह वर्ष सम्हारलहुँ
सहलो जाइ नहि अछि आब टूटे हिया

साजन लेल रखने नेह छी कोंढ़ तर
रुकि नहि करु जुलुम तरसै हमर ई जिया

आँकुर मोनमे प्रेमक जखन फूटलै
दुनियामे रहल नहि आब कोनो ठिया

साउन बीत गेलै टूटि दम अछि रहल
जल्दी आउ 'मनु' जरि गेल आसक दिया

(बहरे कबीर, मात्राक्रम : 2221-2221-2212)

8

कुटीमे आइ साँवरिया आबि गेलै
करेजक तार सभ सोहर गाबि गेलै

पिया बुझि कय हमर मोनक दर्द मिसियो
कतेको दुख अपन हँसिते दाबि गेलै

हुनक मुस्कीसँ सगरो दुनियाक सम्पति
हृदय सबटा हमर छनमे पाबि गेलै

बनेलहुँ हम अपन जे हुनका सजनमा
जिला भरि केर लोकक मुँह बाबि गेलै

बसल छल मोन मंदिरमे 'मनु' जिनक छबि
हुनक हियकैँ हमर विनती भाबि गेलै

(बहरे करीब, मात्राक्रम : 1222-1222-2122)

9

अहाँ बिनु नै सुतै नै जागैत छी हम
कही की राति कोना काटैत छी हम

सिनेहक मोल नै बुझलहुँ संग रहितो
अहाँ बिन आब छुपि बड़ कानैत छी हम

करेजा केर भीतर छबि दाबि रखने
अहींकेँ प्राण अप्पन मानैत छी हम

बुझू नै हम खिलाड़ी एतेक कचिया
अहाँ जीती सखी तेँ हारैत छी हम

अहाँ जतए कतौ जगमे खुश रही 'मनु'
इहे वरदान सदिखन माँगैत छी हम

(बहरे करीब, मात्राक्रम : 1222-1222-2122)

10

हँसै छथि ओ हिया छनमे तोरि हम्मर
सिनेहक डोर गेली ओ छोरि हम्मर

भ गेने दूर आँखिसँ की नेह बिसरब
किए ओ गेलखिन मुखड़ा मोरि हम्मर

लगा कय आस बैसल छी मोन मारल
कनी नहि सोचलनि जियरा कोरि हम्मर

उमड़ि आँखिसँ बसोधारा नोर बहलै
भिजल अछि भाग कोना ई बोरि हम्मर

सिनेहसँ आब बहुते अछि डरि रहल 'मनु'
सगर अपने हिया कयलक चोरि हम्मर

(बहरे करीब, मात्राक्रम : 1222-1222-2122)

11

जकर नै दालि गललै कडुआय छै ओ
समय संगे कतेको बौराय छै ओ

अखाड़ामे जखन जीतब कठिन रहलै
प्रपंचक बाट धेने हरषाय छै ओ

सभक सोझाँ कते हिम्मत देखबै छै
मुदा जनता हियामे घबराय छै ओ

पहीने छै लगै केहन नीक सभटा
जखन थापर पड़ै छै पछताय छै ओ

कपट कय जे बुझै छै बुझलक कियो नहि
'मनु'क ई देख मुस्की अकुलाय छै ओ

(बहरे करीब, मात्राक्रम : 1222-1222-2122)

12

गालपर तिलबा कते सान मारैए
निकलु नहि बाहर सभक जान मारैए

देखलौं जतए अहींपर नजरि सभहक
सभ तरे तर आँइखक बाण मारैए

तीर्थमे पंडित तँ मुल्ला मदीनामे
सभ अहींकेँ राति दिन तान मारैए

आइ सुन्नरि मोहमे बूढ़ नव डूबल
देखिते मुँह फारि मुस्कान मारैए

काज कोनो नहि बनेए जँ जीवनमे
'मनु' अहीं लग फूल आ पान मारैए

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222, दोसर शेरक दोसर पाँतिमे 'आँखि' केर उच्चारण 'आँइख' जकाँ लेवक छूट लेल गेल अछि।)

13

एखनो कोना क छी नहि जनेलौं हम
छोरि नेहक आन नहि धन कमेलौं हम

मोन खोखरलक हमर जे दुनू हाथे
ओकरो हँसि-हँसि क संगी बनेलौं हम

फूल सगरो छोरि काँटे किए बिछलौं
ई करेजा जानि कोना लगेलौं हम

मान राखब लेल मुँहपर हँसी अनलौं
ओ तँ बुझलनि धर्म अप्पन गमेलौं हम

टूटलै सगरो करेजा जखन 'मनु'कैं
कहि गजल ताड़ी मगन भय चढ़ेलौं हम

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222)

14

दर्द देखायब करेजाक मानब की
काल्हि सपनोमे हँसी छोरि कानब की

प्रेम पुरुषक छैक गोबर अहाँ कहलौं
चीर देखायब करेजा तँ गानब की

दोष सभमे नहि कतउ एकमे हेते
संग हमरो ओहिमे आब सानब की

आइ छै अन्हार सगरो अहाँ कहलौं
आँखि मुनि संसारमे जोत आनब की

किछु भरोसा प्रेममे कय अहाँ देखूँ
होइ छै की नेह ई 'मनु'सँ जानब की

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222)

15

की बनब चाहै छलौं हम कि बनि गेलौं
प्रेममे प्रियतम अहीं केर सनि गेलौं

आब कनिको नहि रहल मोल परिवारक
जेब खाली होइते हम तँ जनि गेलौं

सुधि रहल नहि बोझ लदने अपन हमरा
पाबि चुटकी भरि सिनेहेसँ कनि गेलौं

खूनमे सदिखन बसल नेह गामक अछि
छल लिखल परदेशकेँ गाम मनि गेलौं

आब प्रेमक ई अगण लय रहल जीवन
मोनमे बसि 'मनु' हमर साँस गनि गेलौं

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222)

16

हम तँ ढोलक छी सगर बाजिते रहलहुँ
बात सुनलक नहि कियो पीबिते रहलहुँ

प्रेम मोनक बंद रहिगेल मोनेमे
गप्प कोना ई कहब सोचिते रहलहुँ

छल जकर सभ आस ओ छोरि चलि देलक
दर्द लेने मोनमे जीविते रहलहुँ

फाड़ि देखायब करेजा तँ मानत के
तेँ अपन टूटल हिया जोड़िते रहलहुँ

बंद भेलै ई शराबो करत की ‘मनु’
आँखि पथने गाममे ताकिते रहलहुँ

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222)

17

हम अहाँकेँ देखिते सुधि बिसरि गेलौं
लेसने बिन आगि सौंसे पजरि गेलौं

प्राण लेलक आँखि मिलनाइ हरजाइसँ
खा कऽ मोने मोन मुँगबा पसरि गेलौं

अछि जकर मुस्की इजोते सगर चकमक
मोरिते मुँह पानि बिन हम पिछरि गेलौं

स्वर्ग भेटल ओ अहाँ बिन नरक भेलै
छोरि सुख बैकुंठकेँ झट ससरि गेलौं

देख निरमल नेह हुनकर हिया गदगद
बुझि सफल 'मनु' भेल सपना झहरि गेलौं

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222)

18

ई जँ अंतिम राति भेलै तँ की करबै
काल्हि नै नव भोर एलै तँ की करबै

आइ छी हमरासँ रूसल अहाँ बहुते
काल्हि हम्मर प्राण गेलै तँ की करबै

ताकि रहलहुँ बाट भरि युग अहाँकेँ हम
नेह आँखिसँ बहि क हेलै तँ की करबै

हँसि क सहि लेलहुँ जमानाक सभ पीड़ा
छलसँ अपने पाछु ठेलै तँ की करबै

छोड़ि दुनिया जा रहल छी भरोसेपर
भाग्य एना 'मनु' जँ खेलै तँ की करबै

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222)

19

जीवनक मेटैत अन्हार बाबूजी
छथि हमर भाग्यक सगर द्वार बाबूजी

छोड़ि सुख काटैत ओ राति-दिन दुख छथि
प्रेम परिवारक तँ आधार बाबूजी

केहनो संकट अबै ठाढ़ सोझाँ ओ
छथि घरक अनमोल रखवार बाबूजी

आँखिमे आशीष लेने हियामे डर
छी अहीं बच्चाक संसार बाबूजी

हारि कखनो जीवनक खेल 'मनु' गेलै
सामने मुस्कैत पतवार बाबूजी

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222)

20

पैघ नहि जीवनसँ दोसर सजा कोनो
नहि कतौ अछि एहि दर्दक दवा कोनो

बंद केने मोनमे छी दुखक सागर
केकरो लागल भनक नहि हवा कोनो

सत्य अंतिम मृत्यु अछि जीवनक सबहक
बेसि एहिसँ आन अछि नहि मजा कोनो

बेइमानी आ कपटकेँ जतय घर नहि
अछि अहाँ लग एहि जगमे पता कोनो

'मनु' हियक भीतर अहंकार जे मारय
नहि कतो एहेन भेटल गदा कोनो

(बहरे कलीब, मात्राक्रम : 2122-2122-1222

21

साफ पवितर गंगा जकाँ आँखि तोहर
छापि लेलक भीतर करेजाक ओहर

भेल हर्षित तन-मन हमर नेह पबिते
बिहुसि जेना लोभी कतौ देखि मोहर

आइ गदगद अछि भेल सभ रंग मोनक
ई हृदय अछि भीतरसँ गाबैत सोहर

छथि पिया मनमोहक हमर चित्त छलिया
बास छनि हुनकर ई हिया मोर खोहर

छोड़ि दुनिया नहि 'मनु' कतौ आब जेतै
देखि तोहर सुन्दर छविक दिव्य जोहर

(बहरे खफीक, मात्राक्रम : 2122-2212-2122)

22

चान सन शीतल रूप केहन अहाँकेँ
अप्सरा स्वर्गक होइ तेहन अहाँकेँ

अछि हृदयमे मूरत अहाँ केर सोभित
मोहि लेलक ई रूप एहन अहाँकेँ

देखिते आनंदसँ हिया भेल हर्षित
मंद शीतल मुस्कान जेहन अहाँकेँ

अपन आँखिक काजर बना राखि लिअ ने
प्राण हम्मर अछि आब रेहन अहाँकेँ

मोटरी दिअ माथक अपन आब सगरो
‘मनु’ तँ सबटा लय लेत गेहन अहाँकेँ

(बहरे खफीक, मात्राक्रम : 2122-2212-2122)

23

अछि जँ ई जिनगी प्रेम केनाइ सीखू
डर बिसरि जगमे दुख मिटेनाइ सीखू

काल्हिकेँ नै कोनो भरोसा बचल अछि
आइ सभकेँ अप्पन बनेनाइ सीखू

जीवनक सुख दुख बाट दू छैक बुझलौं
दूबटीयापर हँसि क गेनाइ सीखू

राग मनमे प्रेमक जगाबैत सगरो
आँखि सबहक सोझाँ उठेनाइ सीखू

'मनु' अछुत छै अपने किए मानने छी
डाह बिसरा कय हिय लगेनाइ सीखू

(बहरे खफीक, मात्राक्रम : 2122-2212-2122)

24

जखन कखनो जे सोचब हमरा
अपन लगमे ही पायब हमरा

हमर गजलक आखर तनमनमे
कचोटत तँ अहाँ ताकब हमरा

अलग छी एखन कोनो गप नै
हृदयमे सदिखन देखब हमरा

दुनू दू तन एक्के जिनगी छी
अहाँ कखनो नै बिसरब हमरा

अहाँकेँ हम छी कहलौं जे 'मनु'
कि मुइला बादो मानब हमरा

(बहरे गोविंद, मात्राक्रम : 1222-222-22, सभ पाँतिमे। दोसर शेरकेँ दोसर पाँतिमे दूटा अलग-अलग लघुकेँ दिर्ध मानक छुट लेल गेल अछि)

25

चलि अहाँ संगे हमर जीवन ताड़ि दिअ
छी पियासल हम कनी अमरित ढारि दिअ

चारु दिस अन्हार पसरल अछि मोनमे
आबि दीया एकटा प्रीतक बारि दिअ

डेग डोलैए हमर नेहक आसमे
प्राण बनि देहक अहाँ जीवन धारि दिअ

मेघ धेने अछि सुखक आँगनमे किए
आ अपन मुसकीसँ ओ सभटा मारि दिअ

आर नहि हमरा तँ चाही किछु प्रेममे
बस अहाँ जीवन अपन 'मनु'पर हारि दिअ

(बहरे जदीद, मात्राक्रम : 2122-2122-2212)

26

भरि जनम सगरो करेजा टुटिते रहल
मोनकँ कोना हमर सभ कुटिते रहल

जेकरा हम सोपलौं तन-मन धन अपन
देहकँ ओ हँसि कऽ सदिखन लुटिते रहल

छल लिखल भागक हमर केहन देखियौ
मोन ई जुल्मी अछैते घुटिते रहल

पीठ पाछू सभ कियो रेतै कंठ छै
एक दोसर केर नाता छुटिते रहल

'मनु' सिनेहक नव कलश कतबो जोड़लौं
काँच बासन सन भहरि ई फुटिते रहल

(बहरे जदीद, मात्राक्रम : 2122-2122-2212)

27

प्रेममे हुनकर जहर चिखने जाइ छी
सभ बुझैए हम निसा कयने जाइ छी

मानतै के देख मुँहपर मुस्की हमर
की करेजाकेँ अहाँ खुनने जाइ छी

जे मयूरक पाँखि पेलौं उपहारमे
प्राण बुझि संगे सगर धयने जाइ छी

रोशनाई नै कलममे बड़ अछि कहक
चीर छाती सोणितसँ लिखने जाइ छी

जीवनक ठोकर कते लागल चारुदिश
'मनु' सुमरि सभ चोट ई सहने जाइ छी

(बहरे जदीद, मात्राक्रम : 2122-2122-2212)

28

नहि सिनेहक मोल मिसियो बुझलक हमर
लोक हँसि हँसि कय करेजा तजलक हमर

डोर साँसक जेकरा देलौं हाथमे
नहि हिया ओहो तँ संपति तकलक हमर

करु भरोसा आब कोना ककरोसँ हम
प्रिय छल जे मोनकेँ बड़ खुनलक हमर

मीत छल मोनक सगर जे सुखमे बनल
बुझि घड़ी दुख केर ओ नहि सुनलक हमर

देत अनकर दोष ‘मनु’ कनिको आब नहि
एहने बिधना कपारे लिखलक हमर

(बहरे जदीद, मात्राक्रम : 2122-2122-2212)

29

प्रेममे सदिखन किए हमहीं हारलौं
भागमे सभटा लिखल तोरा बारलौं

चैन मोनक आब भेटत कोना कतय
मोनमे खा चोट चित अप्पन मारलौं

राति-दिन आँखिसँ बहै नेहक जल सतत
आगिमे तोहर विरहकेँ घी ढारलौं

आब दुनियामे रहब नहि तोरा बिना
देख ली हम एक छन तेँ यम टारलौं

'मनु' जियाबै लेल तोहर हिय प्रेमकेँ
खून देहक हम अपन सभटा गारलौं

(बहरे जदीद, मात्राक्रम : 2122-2122-2212)

30

छूलक जे मोनसँ ओ आखर कहि दिअ
आँखिसँ जे पीलौं ओ सागर कहि दिअ

निर्मोही दुनियामे सभ मतलबकेँ
धोखा जे देलक ओ पाथर कहि दिअ

मोनक कोठीमे छी जे दुख रखने
आजुक दिन ओ सभकेँ सादर कहि दिअ

नेहक रस छलकैए आँखिक रस्ता
प्रेमसँ भरि ओ सुंदर गागर कहि दिअ

प्रेमक आगिसँ जीया धड़कय लागल
कोमल मोनक 'मनु' ओ कातर कहि दिअ

(बहरे मीर, मात्राक्रम : 22-22-22-22-22)

31

जीवन भरि सबहक सुनिते रहलहुँ
मोनक सभ पीड़ा पिबिते रहलहुँ

गामक घर आँगन खाली कय हम
शहरक धूवाँमे जिबिते रहलहुँ

पोखरि भरि बाड़ीसँ मिला लयने
बिन माछक थारी तकिते रहलहुँ

सभकेँ सभ किछु नहि भेटल जगमे
भागक लिखलाहा गणिते रहलहुँ

मुँह बोने कौआ सगरो बैसल
चुप भय 'मनु' सभटा सहिते रहलहुँ

(बहरे मीर, मात्राकर्म : 22-2-22-22-22, तेसर शेरकेँ पहिल पाँतिमे दूटा अलग-अलग लघुकेँ दिर्घ मानक छूट लेल गेल अछि।)

32

किए तीर आँखिसँ अहाँकेँ चलैए
हँसी ई तँ घाएल हमरा करैए

मधुर बाजि पाजेब पैरक छमा-छम
हृदयमे हमर राति दिन ई बजैए

बसंतक हबामे हिलोरे खुजल लट
चकित लोक दाँतेसँ आँगुर कटैए

ससरलै जँ मिसियो अहाँ केर आँचर
अपन सुधि बिसरने कतेको मरैए

अहींकेँ तँ मुँह देखि जीवैत 'मनु' अछि
भ जेए मिलन मोन सदिखन रहैए

(बहरे मुतकारिब, मात्राक्रम : 122-122-122-122)

33

हँसू यौ पिया मोनकेँ नहि दुखाबू
अपन एहि दासीसँ नैना लगाबू

अहाँ बिनु विकल भेल छी राति-दिन हम
पिया यौ हमर ई जियाकेँ जुड़ाबू

सजौने कते छी अहाँ प्रीत मोनक
कनी आबि नेहक तँ दरशन कराबू

अहाँ बिनु अपन देह बैरी बनल अछि
उठू यौ पिया आब हमरो उठाबू

विरहमे मरण सन भ जीबैत 'मनु' अछि
पियाजी मिलनके गजल नव सुनाबू

(बहरे मुतकारिब, मात्राक्रम : 122-122-122-122)

34

हृदय कोरि कय ओ हँसै छथि
हमर मोनमे जे बसै छथि

करेजाक बनि दर्द सदिखन
नयन नीर बनिकय खसै छथि

बहुत छल मनेबाक कोसिस
मुदा ओ कपारे रुसै छथि

बना कय अपन ओ बिसरने
अखन आब अम्बर धसै छथि

बनेबाक छल चाह जिनका
अपन बनि क 'मनु' ओ डसै छथि

(बहरे मुतकारिब, मात्राक्रम : 122-122-122)

35

हँसि हमर गप्प सुनलहुँ अहाँ
दर्दकेँ नै तँ बुझलहुँ अहाँ

दाँतकेँ बीचमे जीभ सन
मोनमे सच्च मुनलहुँ अहाँ

चिन्हलौं नै हमर मोनकेँ
जानि धनहीन घुमलहुँ अहाँ

देखते रंग दुनियाक ई
मोनकेँ तोरि झुमलहुँ अहाँ

छोड़ि दुखमे खुशीकेँ पकड़ि
कोंढ़ 'मनु' केर खुनलहुँ अहाँ

(बहरे मुतदारिक, मात्राक्रम : 212-212-212)

36

सभसँ बड़का गजलगोहि वर भेटलै
राति दिन ओ चलाबैत हर भेटलै

सोचि गेलहुँ भरोसा जकर कय क हम
गाममे नहि कतौ ओ तँ घर भेटलै

सत्य बजबाक साहस किए नहि कतौ
हाकिमक आँखिमे आइ डर भेटलै

जीत लेलक सभक मोन ओ गाममे
देख ओकर हृदय भक्त बड़ भेटलै

'मनु' निभेनाइ नेहक कठिन अछि बुझल
काँट रोपल अपन पैर तर भेटलै

(बहरे मुतदारिक, मात्राक्रम : 212-212-212-212)

37

साधु छै चोर ई मिल कहै चोर सभ
झूठकेँ सत्य एतय रटै चोर सभ

देखि उन्नति लगातार सगरो सभक
भीतरहि डाहमे जरि मरै चोर सभ

लूटि कय गाम आ देश जे गेल खा
मंच पर आबि नेता बनै चोर सभ

राति दिन खैट शोणित गरीबक बहै
आइ चैनसँ महलमे रहै चोर सभ

घोर कयने कते पाप संसारमे
आब 'मनु' न्याय डंडसँ डरै चोर सभ

(बहरे मुतदारिक, मात्राक्रम : 212-212-212-212)

38

जखन सगरो दर्द भेटल
अपन सीलौं ठोर रेतल

द’बल अपने हाथ गरदनि
तखन के ई नोर मेटल

घरक बन्हन छोरि दुनिया
सटल जतए नोट गेटल

भरोसा करु आब कोना
लखन भेषे चोर फेटल

दहेजक ‘मनु’ चारिचक्का
बियाहक पहिनेसँ सेटल

(बहरे मजरिअ, मात्राक्रम : 1222-2122)

39

जन्मसँ टुगर हम सिनेहक सुख लेल तरसैत रहलौं
भेटल किरण एक आसक तकरो तँ मिझबैत रहलौं

दुख एहिकेँ केखनो नै की प्रेम किछु नै पएलौं
तकलीफ की एहि दुनिआमे चुप्प कानैत रहलौं

चमकैत सभ बस्तुकेँ हम अनजानमे सोन बुझलौं
सोना जखन हम पएलौं नै बुझि कऽ हारैत रहलौं

किछु नै बचल आब अपनेकेँ लूटबअमे लागि गेलौं
ताड़ी कटीयाक मेलामे गीत गावैत रहलौं

आँखिक बिसरि आस गेलौं अनुराग सभटा बिसरलौं
गेलौं हराएब दुख 'मनु' छन सुखक बिसरैत रहलौं

(बहरे मुजस्सम वा मुजास, मात्राक्रम : 2212-2122/2212-2122)

40

रूप मारूक तोहर देखते कनियाँ
खून देहक सगर भेलै हमर पनियाँ

नहि कतौ केर विश्वामित्र छी हमहूँ
प्राण लेलक हइर ई तोर चौवनियाँ

जरि कऽ तोहर पजारल आगिमे दुनियाँ
माय बापक नजरिमे भेल छै बनियाँ

नीक काजक बहुत सपना छलहुँ बुनने
आइ सभ किछु बिसरि बेचैत छी धनियाँ

झाँपि राखू अपन रूपक महलकेँ 'मनु'
भेल पागल कतेको देखि यौवनियाँ

(बहरे मुशाकिल, मात्राक्रम : 2122-1222-1222)

41

आबि जायब हमर अंतिम बिदाई पर
फूल दय देब हाथसँ मुँह दिखाई पर

नोर नहि देखलक कष्टक कियो कखनो
आँखि सबहक हमर हाथक मिठाई पर

पोसलौं पेट जीवन भरि कमा हम मरि
घेंट लेलक कटा हँसि ओ फिदाई पर

आइ दिन धरि तँ सब सहिते छलौं ई हम
आबि जिद गेल पापीकेँ मिटाई पर

केकरा 'मनु' कहत आ के सुनत एतअ
बड़ हँसै छैक सब आनक पिटाई पर

(बहरे मुशाकिल, मात्राक्रम : 2122-1222-1222)

42

बेदरदिया नै दरदिया जानै हमर
टाकासँ जुल्मी प्रेमकेँ गानै हमर

सदिखन जरैए मन विरहकेँ आगिमे
तैयो पिया नै किछु दरद तानै हमर

साउन बितल घुरियो कऽ नै एला पिया
नहि खीचि हुनका प्रेम लऽग आनै हमर

गरजय बिलोका बड्ड बरिसय झिहिर घन
छाती दगध भेलै हिया कानै हमर

बसला पिया 'मनु' दूर बड़ परदेशमे
झरकर हिया कनिको तँ नै मानै हमर

(बहरे रजज, मात्राक्रम : 2212-2212-2212)

43

रंग मलि सगरो लगोलनि गाल साजन
हम छलौं बैसल कि केलनि हाल साजन

भेल लाजसँ लाल मुँह छनमे हमर ई
बाँधि लेलनि पाँजमे बनि जाल साजन

फागुनक महिना समय अछि ई उमंगक
बड़ सुखद बीतत सिनेहक काल साजन

दुख दरद जिनगीक सबटा हम बिसरलौं
रंगलौं जे प्रेममे भरि साल साजन

ई सिनेहक हो परब कखनो खतम नहि
मोन केने 'मनु' हमर रहि लाल साजन

(बहरे रमल, मात्राक्रम : 2122-2122-2122)

44

हँसि क तोरब मोन नहि हम सीखने छी
नहि करेजामे सभक घर छेकने छी

सोपलौं जकरा अपन तन-मन जनम भरि
ओकरो हाथे जहर बड़ चीखने छी

आस छल अपनो समय रंगीन हेतै
दूर रंगक ओहि टोलसँ एखने छी

कीनबाकेँ लेल शहरक वास दू धुर
चास गामक तीन बीघा बेचने छी

करु शिकाइत एहि दुनियाकेँ कते 'मनु'
लैत मीतक जान सगरो देखने छी

(बहरे रमल, मात्राक्रम : 2122-2122-2122)

45

नीक केहन आइ सगरो रीत भेलै
प्रेम जकरा देलियै ओ तीत भेलै

जेब खाली साँझ हम बाजार गेलौं
जे कियो ई बुझलकै भयभीत भेलै

बोल सोहेतै किए ककरो गरीबक
आब धनिकक गाइरो नवगीत भेलै

जन्म भरि गिरगिट जकाँ जे रंग बदलै
ओकरे सभके किए ई जीत भेलै

भाइ भैयारीक मुँह चाटै कुकुर 'मनु'
लाख सोशल मीडिया पर मीत भेलै

(बहरे रमल, मात्राक्रम : 2122-2122-2122)

46

ताड़ीमे कतए मद जे चाही जीबै लेल
माहुरमे कुन जीवन चाही जे गीजै लेल

बाँकी नहि ताड़ीएटा टूटल मोनक हेतु
जीवनमे एकर बादो बड़ अछि पीबै लेल

सिस्टममे फाटल अछि मेघसँ धरती धरि कोढ़
एतय कतयसँ दरजी ई सिस्टम सीबै लेल

जीतब हारब सदिखन लगले अछि जीवन संग
फेरसँ उठि कोशिश नमहर हेतै जीतै लेल

मोनसँ करबै ‘मनु’ अप्पन जीवनकेँ तैआर
कर्मक बीया सगरो बहुते अछि छीटै लेल

(बहरे विदेह, मात्राक्रम : 2222-2222-222-21)

47

आजुक जीवनमे नहि नेहक मोल
बिन वर्षा नहि कनिको मेहक मोल

काका मामा भैया सभ धन केर
पाइक आगू नहि छै देहक मोल

आन्हर की बुझतै फूलक सौंदर्य
लेहरु नजरिसँ जेना लेहक मोल

नश्वर ई काया हेतै माटीक
ककरो नहि जनतब छै खेहक मोल

जगमे रहते सभ दिन कपटी लोक
भेटत कखनो नहि 'मनु' छेहक मोल

(बहरे विदेह, मात्राक्रम : 22-22-22-22-21)

- मेह - मेघ/बादल या वर्षा, मेह केर दोसर अर्थ दाउन करै लेल गाड़ल गेल खूट्टा, जकर चारू कात बरद घुमै छै।
- लेहरु - लहैर, अत्यधिक गर्म प्रदेशमे रहै बला, दोसर अर्थ नेहरु, गाम घरमे कतेक ठाम नेहरुक उच्चारण लेहरु कयल जाइत अछि।
- लेह - लेह-लद्दाख/ अत्यधिक ठंढा प्रदेश
- खेह - धूल, गर्दा वा छाउर
- छेह - अंत, सीमा, वा दुखक पराकाष्ठा।

48

अनलौं करेजा हमर ई स्वीकार करु
हमरासँ एना अहाँ नहि बेपार करु

गरदनि उठा कय जँ हमरा नहि देखबै
हम केकरा लेल एते सिंगार करु

सस्ता महग बाढ़ि रौदी सगरो भरल
सोइच गरीबक अहाँ किछु सरकार करु

हरलौं कते युगसँ तन मन धन बनि अपन
नहि आब ऐ आतमापर अधिकार करु

झूठक बटोरल अहाँकेँ बहुमत रहल
'मनु' नहि सड़ल बाँटि जनता बेमार करु

(बहरे सगीर, मात्राक्रम : 2212-2122-2212)

49

रूसल पियाकेँ मनेबै कोना क हम
अपनो हियाकेँ दखेबै कोना क हम

नयनासँ धारा कते नोरक बहिरहल
मोनक विरहकेँ नुकेबै कोना क हम

छी आँखिमे आस बहुते रखने सजल
नेहक डगरकेँ बिछेबै कोना क हम

प्रेमक सबक ओ बिसरिए गेलाह सभ
विधि प्रेम हुनका सिखेबै कोना क हम

भोरक किरण बनि अएलहुँ यौ 'मनु' हमर
सुख आब नेहक नुकेबै कोना क हम

(बहरे सगीर, मात्राक्रम : 2212-2122-2212)

50

मजधारमे छोड़ि असगर गेलहुँ किए
एतेक भारी परीक्षा लेलहुँ किए

आएब कहि घुरि अहाँ नै अयलहुँ पिया
मोनक विरहकेँ पजाइर देलहुँ किए

कनि-कनि बितैए अहाँ बिन सगरो उमरि
नयनासँ ओझल पिया यौ भेलहुँ किए

जीवन कटत आब असगर नै ई हमर
हमरासँ एना अहाँ तमसेलहुँ किए

ई प्राण बिनु देह लदने थकलहुँ बहुत
माहुर तँ हम ‘मनु’ बिना नै खेलहुँ किए

(बहरे सगीर, मात्राक्रम : 2212-2122-2212)

51

उठलै करेजामे दरदिया हो राम
भेलै पिया जुल्मी बहरिया हो राम

साउन बितै छै मन पियासल जरि गेल
एलै पिया आ नहि कहरिया हो राम

सुनि कोइलीकेँ कुक हिया गेलै सिहरि
आँखिसँ बहै नोरक टघरिया हो राम

जरलै हमर जीवन बिना प्रेमक आगि
लागल हमर सुखमे वदरिया हो राम

जीवन 'मनु'क बनलै बिना तेलक दीप
कोना बरत मोनक बिजुरिया हो राम

(बहरे सरीअ, मात्राक्रम : 2212-2212-2221)

52

कोना कहब हम घुरि गाम आबै लेल
गेलौं अहाँ दिल्ली धन कमाबै लेल

कहबै करेजक हम दर्द दुख ककरासँ
छी गप्प रखने बहुते सुनाबै लेल

ठोकर कपारक लागल जखन सबतरिसँ
नहि नोर आँखिक बचलै नुकाबै लेल

सदिखन अहाँ बैसल मोनमे बनि मीत
की दूर गेलौं हमरे कनाबै लेल

कोना क 'मनु' कहतै आब अप्पन दोष
घुरि आउ फेरसँ दुनियाँ बसाबै लेल

(बहरे सलीम, मात्राक्रम : 2212-2221-2221)

53

पोथीक तर दबि पढुआ सगर मरि गेल
जे प्रेममे डूबल जीविते तरि गेल

सदिखन जतय मनमे छल डरक आतंक
अबिते अहाँके नव फूल फल फरि गेल

धरती तपल छल जे पानि बिन तरसैत
हथियाक हँसिते बरखा निमन परि गेल

आनक सुखक चिंता बेस अप्पन दुखसँ
डाहसँ कतेको घर तेल बिन जरि गेल

पाथरसँ 'मनु' शाइर बनि रहल अछि आब
तोरासँ जे मृगनयनी नजरि लरि गेल

(बहरे सलीम, मात्राक्रम : 2212-2221-2221)

54

हुनक मुस्कीक जादू जान मारैए
नजरि खसिते हियामे बाण मारैए

चमक घोघेसँ रूपक पूर्णिमा लेने
सगर अँगना कते मुस्कान मारैए

उदासी मोनमे कखनो जँ पसरैए
अहीं लग आबि ई फुलपान मारैए

सँभाइर पैर धरतीपर कनी राखू
झनक पायलसँ ई सुर तान मारैए

'मनु'क सगरो गजलमे बनि अहीं आखर
कते यौवन दमकि सोहान मारैए

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222)

55

चलू प्रेमक नगर सजनी बसाबै छी
दुनू प्रीतक डगर मिलि कय सजाबै छी

रहे दुनियाक डर ई आब कनिको नहि
हियामे दीप नेहक ओ जगाबै छी

जखन कखनो गबै छै कोइली वनमे
मधुर बंसी अहीं संगे बजाबै छी

अलग कखनो कियो नहि कय सकत हमरा
करेजा खोलि सप्पत खा बताबै छी

मधुर गाइब गजल सुरमे हिया बोड़ल
सिनेहक छांवमे 'मनु'कैँ सुनाबै छी

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222)

56

झुकल तोहर नजरि बिजली खसाबैए
सजल ई रूप चानोकेँ लजाबैए

मधुर मुस्कान तोहर देखि कय सजनी
अपन संसारकेँ साउन बसाबैए

जखन आँचर उड़ल तोहर हवामे ई
हिया बेकल कतेकोकेँ कराबैए

कनी मुँह देख लै छी जाहि छन तोहर
उमर भरिकेँ दरद सभटा हटाबैए

बिकल ‘मनु’ प्रेममे तोहर बनल पागल
गजलमे प्राण बुझि तोरे सजाबैए

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222)

57

जँ हम मरि जाइ कनिको नै अहाँ कानब
बितल जे संग ओ सगरो खुशी गानब

करेजामे नुकोने छी कतेको दुख
हमर सामर्थ जे मुँहपर हँसी आनब

जहर पी दर्द के हम चिन्हलौ दुनियाँ
नदीमे ठेल सिखने लोक अछि छानब

द कर्जा मांगि देखू एक दिन ककरो
सगर दुनियाँक माया छन्नमे जानब

भरोसा प्रेम दोस्ती नाम मतलबकेँ
कपट 'मनु' भेषमे सब एतए दानब

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222)

58

पिया जुलमी हमर दुख हम कते सहबै
अहाँ सुनबै जँ नहि हम केकरा कहबै

सखी बहिना अहाँके प्रेममे छूटल
पिया हम आब कोना असगरे रहबै

निहोड़ा आब करु हम कोन विधि सजना
सगर उसरैग एही भक्तपर ढहबै

विरहके आगिमे जरि मरि रहल छी हम
अहाँ आइब करेजामे कखन गहबै

रहत नेहक वचन नै यादि 'मनु' जा दिन
जहर माहुर अछैते पानिमे बहबै

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222)

59

करेजामे अपन हम की बसेने छी
अहाँक नामटा लिख-लिख नुकेने छी

बितै अछि राति नहि कनिको कटै अछि दिन
पियाक बाटमे पपनी सजेने छी

हमर ठोरक हँसीकेँ देखि नहि हँसियौ
अहाँ हँसि लिअ दरद तेँ हम दबेने छी

हमर जीवन अहाँ बिनु नहि छलै जीवन
मनुक्खसँ देवता हमरा बनेने छी

गजलमे ई निसा आँखिक अहींक 'मनु'
बुझू नहि हम महग ताड़ी चढ़ेने छी

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222, मतलाक दोसर पाँतिमे, अहाँक गणना 122 मानल गेल अछि, 'क' केँ गजलक प्रवाहमे 2 मानक छूट लेल गेल अछि। तेसर शेरकेँ दोसर पाँतिमे पियाक गणना 122 मानल गेल अछि, 'क' केँ गजलक प्रवाहमे 2 मानक छूट लेल गेल अछि। तेनाहीते मकताक पहिल पाँतिमे, अहींक गणना 122 मानल गेल अछि, 'क' केँ गजलक प्रवाहमे 2 मानक छूट लेल गेल अछि।)

60

गगन नेहक बना बदरा मधुर बरखा बहाबै अछि
पिया धरतीक आँचरमे अमृत रस ई चुआबै अछि

सजल नैना अहाँकेँ ई धनुष सन देखि कजरायल
हमर ओझल हियामे ओ बिलोका बड़ खसाबै अछि

जखन बाजल झनक पायल झमाझम भय कतहुँ बरसल
हुनक केशक हवा सगरो सुगंधित मन बनाबै अछि

मिलन कय आसमे बैसल तकै छी बाट प्रियतमकेँ
उमड़ि कय मेघ जे गरजै हियामे लौ जगाबै अछि

उमँग मोनक सगर संगे अपन नेने किए गेलहुँ
हमर ई प्राण ‘मनु’ लेने गजल विरही सुनाबै अछि

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222-1222)

61

नुका कय मुँह अपन सगरो कनै छी हम
विरहकेँ आगिमे सदिखन जरै छी हम

लगा नेहक किए ई आँच चलि गेलौं
करेजक दर्द सहियो नहि सकै छी हम

लगन एतेक सतबै छै बुझल नहि छल
विछोहे राति दिन घुटि-घुटि मरै छी हम

नजरिमे छी सभक हारल बताहे टा
बुझत की आन आनंदे रहै छी हम

पिया ओता हमर ई सोचि जीबै छी
लगोने आस 'मनु' रस्ता तकै छी हम

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222)

62

अहाँ कखनो तँ बाट हमर घरक धरबै
अहाँ बिन हाथ नहि दोसर वरक धरबै

निहारै राति दिन हम बाट खाली छी
अहाँ कखनो कनी कोनो सड़क धरबै

सगर सिंगार टुकली नाककेँ नथिया
अहीं सेनुर पियाजी सिथ परक धरबै

मिलनकेँ आसमे साजनसँ हम चललौं
गड़ी घोड़ा ज भेटल नहि टरक धरबै

हमर जीवन सगर अछि ई अहीं वास्ते
अहाँ बिन छोरि जीवन 'मनु' नरक धरबै

(बहरे हजज, मात्राक्रम : 1222-1222-1222,

मतलाक मिसरा-ए-ऊलामे दूटा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानक छूट लेल गेल अछि। मतलाक मिसरा-ए-ऊला सभार, ओम प्रकाश जी, लाइव मोशायरा विदेह फेशबूक ग्रूपसँ (03/03/2012)।

63

आबि प्रेमक अमरित अहाँ पीआ तँ दिअ
मुइल जीवन फेरसँ हमर जीआ तँ दिअ

काल्हि नहि बाँचत शेष जीवन केर किछु
आइ सुंदर सन एकटा धीआ तँ दिअ

जाइ छी हमरा आब चाही प्राण नहि
पात मुँहमे तुलसीक आ बीआ तँ दिअ

प्राण बिनु देहक हाल देखू आब नहि
बाट ओगरने आँखिकेँ सीआ तँ दिअ

आब चाही हमरा तँ 'मनु' अंतिम बिदा
प्रेममे बारल एकटा दीआ तँ दिअ

(बहरे हमीम, मात्राक्रम : 2122-2212-2212)

64

कखनो कियो हमरो प्रेम करबे करत
गेलहुँ जँ नै घर ओ बाट तकबे करत

भागैत अछि टोलक लोक नामसँ हमर
सभ एकदिन हमरो संग चलबे करत

बैसल घरे घर सभ कान मुनने अपन
दोसर मुँहेँ हमरो लेल सुनबे करत

के एतए आयल पी अमर पान रस
जे जन्म लेलक ओ जीव मरबे करत

बुझलक कनी जे 'मनु' केर कहियो हिया
दू नोर मुइलापर ओ तँ कनबे करत

(मात्राक्रम : 2212-2221-2212 सभ पाँतिमे)

65

टोपीमे लगै ई बुढ़ा झक्कास छै
बुढ़िया बिन अछैते मरै नै आस छै

गामक आइ केहन असल रखबाड़ छै
एको धुर बचल ओकरा नै चास छै

शिक्षा केर घरमे बिकाइत ज्ञान छै
आजुक नीति सगरो कते बकवास छै

पूजै लेल कन्या तकै सब लोक छै
बनबे लेल कनियाँ तकै अरदास छै

बाबू माय एने बजट बिगड़ैत छै
साढ़ू सारि 'मनु' बैंक खासम खास छै

(मात्राक्रम : 2221-2212-2212 सभ पाँतिमे।)

66

बनेलहुँ अपन हम जान अहाँकेँ
जँ कहि लाबि देबै चान अहाँकेँ

हँसीमे सभक माहुर झलकैए
सिनेहसँ भरल मुस्कान अहाँकेँ

कमल फूल सन गमकैत अहाँ छी
जहर भरल आँखिक बाण अहाँकेँ

पियासल अहाँ बिनु मोन हमर अछि
द दी भेट नेहक पान अहाँके

करेजक भितर 'मनु' केर बसल छी
रहल नहि किए ई भान अहाँकेँ

(मात्राक्रम : 122-122-21-122)

67

खड़ाम पैरमे नहि अकास मोनमे छल
कुहास बड्ड बाहर इजोत टोनमे छल

टएर हम चलाबी गरीब तेँ बुझू नहि
हमर अपन सगर धन अहाँक लोनमे छल

किएक आनके दुख बुझत चलाक नेता
हुनक सगर बुढ़ापा तँ सेफ जोनमे छल

सिनेह शांति सबटा जगतसँ गेल हेरा
अखनसँ नीक बेसी मनुष्य बोनमे छल

पतंग पाछु भागैत मनुक हर्ख देखू
पुतौह केर जेना बहिनसँ फोनमे छल

(मात्राक्रम : 121-2122-121-2122, सभ पाँतिमे)

68

जखन मोन कानल गजल कहलौं
रहल कोंढ़ छानल गजल कहलौं

जमाना सुतल छल जखन नींदसँ
तहन राति जानल गजल कहलौं

गरीबक घरक जेठ बेटा हम
अभाबे इ गानल गजल कहलौं

जुआ छल लदल कांहपर लोकक
पसीनासँ सानल गजल कहलौं

उमर ‘मनु’ बितल आर की करबै
अपन मोन ठानल गजल कहलौं

(मात्राक्रम : 122-122-1222, सभ पाँतिमे)

69

जेना जेना राति बीतल जाइए
तेना तेना देह धीपल जाइए

जुल्मी संगे संग रहितो हे सखी
नहिए हुनकर मोन जीतल जाइए

योवनमे पुरबा बसातक जोड़ छै
साबरिया बिनु नै तँ जीबल जाइए

डूबल निनमे छै सगर दुनिया जखन
बीया प्रेमक एतऽ छीटल जाइए

भोरे उठिते प्रेम बोरल 'मनु' छलौं
लाजे मरि मुँह आब तीतल जाइए

(मात्राक्रम : 222-2212-2212)

70

भहरल भीत नै उठाउ यौ पाहुन
जर्जर टाट नै सटाउ यौ पाहुन

खाली छाड़बै उछेहबै भरि दिन
झहरल चार नै बचाउ यौ पाहुन

पाकल काँच जेहने घरे भरिमे
बाहर नाक नै कटाउ यौ पाहुन

धधकै आगि खड़ खड़ेल पजरल छै
नहि टंकी बहा जराउ यौ पाहुन

सगरो खाम गेल सड़ि हबेलीकेँ
'मनु'केँ हँसि क नै बजाउ यौ पाहुन

(मात्राक्रम : 2221-212-1222, सभ पाँतिमे।)

71

करेजमे बसा हमरो तँ कनी पिआर करु
अपन बना क हमरा प्रिय अहाँ दुलार करु

पिया कते भरल अछि प्रेम हमर करेजमे
जियब खुशी स जीवन संग हमर विहार करु

मनक तरंग सबटा छोरि अहींक छी बनल
विचारु नै इना जल्दीसँ अहाँ कहार करु

भजैत छी अहाँकेँ मूर्ति अपन हिया त'रे
अहाँ बुझैत छी की आब सगर पसार करु

पिआर नही जतय धन केर बिना कियो करै
सिनेह ओइ 'मनु' दुनियासँ किना उधार करु

(मात्राक्रम : 12-12-12-221-12-12-12 सभ पाँतिमे)

72

पहड़ राति बीत गेल नहि निन्द आबैए हमरा
बितल छन अहाँक संग रहि-रहि सताबैए हमरा

हृदय मोहनी अहाँक छवि आँखिमे जे रखने छी
ल कय आब ई तँ जान मानत बुझाबैए हमरा

इशारासँ राति दिन हियामे बजाबै छी छन छन
मुनल आँखि कोन बीध खोलब रिझाबैए हमरा

अहाँ हँसि अतेक जुनि खसाबू बिजुड़िया ई दाँतक
सहब आब अस्मभव भितर धरि हराबैए हमरा

मधुर भेट केर आब अवसर कखन कोना होयत
विचारेसँ बड्ड 'मनु' करेजा जुड़ाबैए हमरा

(मात्राक्रम : 12-21-21-2122-1222-22, सभ पाँतिमे)

73

अहाँ मुस्कैत रही हमरा देखैत रही
अहाँकेँ प्रेम गजल नव-नव सुनबैत रही

रुसल सजनी जँ रही प्रेमसँ बौसैत रही
सगर गुणगान अहाँक हम गाबैत रही

मधुरगर बोल अहाँ सदिखन बाजैत रही
अहाँकेँ सुनि क सिनेहे हम ताकैत रही

अहाँ ढारैत रही डुबि हम पीबैत रही
सुनरकी संग हिया रसमे तीतैत रही

अहाँ जीतैत रही 'मनु' हम हारैत रही
पिया मनुहारसँ ई जीवन जीबैत रही

(मात्राक्रम : 1222-112-2222-112 सभ पाँतिमे।दोसर शेरक, दोसर पाँतीमे 'अहाँक' 'क'केँ दिर्घ मानक छूट लेल गेल अछि।)

74

प्रियतम अहाँक सुधिमे रहनाइ भेल मुश्किल
जीवैत हम तँ छी नहि मरनाइ भेल मुश्किल

की हाल कहु करेजक टुकड़ी हजार भेलै
सभमे अहींक छवि अछि गननाइ भेल मुश्किल

छी नींद चैन सभपर कब्जा अपन कऽ लेने
कयलौं पिया कि जादू सुतनाइ भेल मुश्किल

बड़ मोनकेँ बुझेलौं ई किछु बुझैत नहि अछि
आइब कनी बुझा दिअ बुझनाइ भेल मुश्किल

सदिखन 'मनु'क हृदय मंदिरमे मुरुत अहींकेँ
बिन पूजने अहाँकेँ सहनाइ भेल मुश्किल

(मात्राक्रम : 2212-122 / 2212-122)

75

नेहक घर बसा तँ लिअ
प्रेमक लय लगा तँ लिअ

हम जन्मेसँ छी टुगर
नै हमरा कना तँ लिअ

सदिखन छी अहाँ हमर
ई हमरो जता तँ लिअ

दिन नै राति कटि रहल
आ जीवन बचा तँ लिअ

कोना जीब बिन अहाँ
प्राणेश्वर बना तँ लिअ

अछि ई नोर नहि पिया
मोती जनि सजा तँ लिअ

'मनु'केँ छी अहाँ सदति
ई सभकेँ बता तँ लिअ

(मात्राक्रम : 2221-212)

76

हुनकर प्रेमक धाहसँ हम गुलाबी भ गेलौं
बुझलनि नहि ओ हमरा हम शराबी भ गेलौं

हँसि कय हम लूटेलौं मोन सगरो अपन बुझि
भेटल नहि कनिको मोजर हिसाबी भ गेलौं

सुनलौं बहुते एखन धरि सभक चुप भ सबटा
सुनिते देरी मोनक हम जवाबी भ गेलौं

जीवन भरि नेना पोसब रहल आस आनक
सरकारी चाकर बनिते नवाबी भ गेलौं

बहुते धोखा जगमे पाबि सिखलौं रहब हम
असगर 'मनु' आखर संगे किताबी भ गेलौं

(मात्राक्रम : 2222-222-122-122 सभ पाँतिमे)

77

ठठड़ी बना कयलनि ओ तँ सराध हमर
जिनकासँ छल मोनक नेह अगाध हमर

मुनि आँखि कयलहुँ विश्वास हियासँ जकर
ओ आबि कयलनि संसार विषाध हमर

ओ भोंकलनि मौका देखि पिजेल छुरी
कहियो छली जे तन-मनसँ अराध हमर

किछु छोड़लनि नहि जीबाक भरोस कनी
संगे घड़ारी लिख लेलनि बाध हमर

अपने जकाँ बुझलहुँ नीक करेज सभक
'मनु' बस इहे जीवनमे अपराध हमर

(मात्राक्रम : 2212-2221-121 12 सभ पाँतिमे)

78

अहाँ सादा कागद परक पहिल कोनो आखर छी
हिया जकरा चिन्है हमर पहिल नेहक सागर छी

नयनमे छी सदिखन अहाँ विष्णु ब्रह्मा शिव बनि कय
सहारा जीवनकेँ हमर अहीं मोनक आदर छी

दुखक भारसँ जीवन हमर जखन टूटय लागैए
सिनेहक जे छाहरि दिए दुलारक ओ आँचर छी

अपन छल जे हँसि देखलक हमर खाली जेबी टा
हिया बुझलक जे देखि कय अहीं मोनक गागर छी

चरण छू कय भेटय जकर सगर तीर्थक फल 'मनु'केँ
अहाँ मैया ममतामयी हमर भागक आगर छी

(मात्राक्रम : 1222-2212-1222-222 सभ पाँतिमे)

भाग २, रुबाइ

1

बाबूजीक करेजमे सदिखन रहलहुँ
तन-मन हुनकर सभटा सम्पत्ति पयलहुँ
दाही पानि रौदसँ सदिखन बचेलन्हि
सेवाक बेरमे हम परदेश भगलहुँ

2

बाबूजी देह जान सबटा देलन्हि
जे किछु छी एखन बाबूजी केलन्हि
भूखे रहि अपने हमर पेट भरलन्हि
सुधि बिसरि अपन हमरा मनुख बनेलन्हि

3

फगुआ अहाँक बिनु कतेक बेरंग अछि
बाँकी बस अहाँक यादेटा संग अछि
एही दुनियासँ जहन अहाँ चलि गेलौं
बुझलौं कतेक कठिन जीवनक जंग अछि

4

आँचर नहि उठाबू आँखिसँ पीबय दिअ
हम जन्मसँ पियासल करेज जुड़बय दिअ
ताड़ीसँ बेसी निसा अहाँक आँखिमे
प्रेमक निसामे अपन कनी जीबय दिअ

5

पीलौं हम तँ लोक कहलक शराबी अछि
एतअ के नहि कहु बहसल कबाबी अछि
बुझलौं अहाँ सभ दुनियाक ठेकेदार
हमरो आँखिसँ देखू की खराबी अछि

6

दर्दक दबाई बिना जीब कोना कय
फाटल करेजकेँ हम सीब कोना कय
सगरो जमाना भेल दुश्मन शराबक
सबहक सोंझा आब तँ पीब कोना कय

7

पीलौं शराब तँ दुनियाँ कहलक बताह
बिन पीने ई दुनियाँ भेल अछि कटाह
जे नहि पीलक कहाँ अछि ओकरो महल
पीबिए क' किएक नहि बनि जाइ घताह

8

भेटल नहि सिनेह तेँ शराबे पीलहुँ
दर्शन हुनक हरदम गिलासमे केलहुँ
के अछि कहैत शराब छैक खराब 'मनु'
बिन रहितौं हुनक शराबेसँ हम जीलहुँ

9

पीलौं नहि तँ की छै शराब बूझब की
बिन पीने दुनियाँमे करब तँ करब की
सभ अछि एक दोसरकेँ खून पीबैत
खून छोड़ि शराबे पी कय देखब की

10

एतेक नेहमे लीबैत किएक छी
दुनिया पुछलनि हम जीवैत किएक छी
सभ बुझलापर 'मनु' अहूँ ई जुनि पूछू
दिन राति एतेक पीबैत किएक छी

11

तोहर प्रेममे पड़ि पीबैत छी हम तँ
ई जुनि कनिको बुझै जीबैत छी हम तँ
ताड़ीमे डूबि भोरेसँ साँझ धरि 'मनु'
फाटल करेज अपन सीबैत छी हम तँ

12

कर्जा कय कऽ जीवन हम जीव रहल छी
फाटल अपनकेँ कहुना सीब रहल छी
सभ किछु लूटा कय 'मनु' अपन जीवनकेँ
निर्लज जकाँ हम शराब पीब रहल छी

13

तोहर लाल ठोर गजबे कय रहल अछि
चंचल ई मोन हमर बड़ भय रहल अछि
लाली तोहर ठोरक देखि कय अजगुत
तोरेसँ रंग अपन फूल लय रहल अछि

14

गोरी तोहर काजर जान मारैए
छौंरा सभ सगर हाय तान मारैए
पेएलक बड़ भाग काजर विधातासँ
तोहर आँखिमे कते शान मारैए

15

लाली मानि कय अहाँ ठोरसँ लगा लिअ
आँखिक अपन करीया काजर बना लिअ
एना जुनि अहाँ कनखी नजरिसँ देखू
प्रियतम बना ‘मनु’कँ करेजसँ लगा लिअ

16

फूसियो जँ कनी अहाँ इशारा करितहुँ
भरि जीवन हम अहींक बाटमे रहितहुँ
मुस्कीमे अहाँक अपन मोन लूटा कऽ
तरहत्थीपर जान लेने हम अबितहुँ

17

साँवरिया पिया अहाँ ई की कएलहुँ
साउन चढ़ल छोड़ि चलि कोना गएलहुँ
शीतल हवा बहल सिहरैए हमर तन
कोना रहब बिनु अहाँ बुझि नै पएलहुँ

18

गोरी तोर मुस्कीमे छौ जहर भरल
नहि एना मुँह खोल कते घायल परल
तोहर फुलझड़ी सन मारुक हँसी सुनि कऽ
भेटत बाटपर कतेको छौंड़ा मरल

19

तोरा देख सुन्नरी सीटी बजैए
धरकन बंद ई कतेकोकेँ करैए
परमाणु बम दुनिया फालतू बनेलक
तोहर कनखीसँ मनुख लाखो मरैए

20

जे घाव अहाँ हमर करेजकेँ देलहुँ
सबटा ओ दर्द दुनियाँसँ नुका लेलहुँ
मुस्कीसँ हमर नहि बुझू जे हम खुश छी
खूनक घुट अहाँक खुशीमे पी गेलहुँ

21

घुमि कनखीसँ कनीक अहाँ ताकि देलहुँ
तन मन अपन एहिपर हम हारि देलहुँ
नहि आब बैकुंठक रहल कोनो आस
सगर अहाँक लेल 'मनु' हम बारि देलहुँ

22

नाथक पजारल नेह धधैक रहल अछि
असगर करेजा हमर तड़ैप रहल अछि
कोन लगने अहाँसँ नेह हम लगेलौं
प्रेमक गरमीसँ देह बरैक रहल अछि

23

छुपि-छुपि राति दिन हम बाट निहारै छी
जल्दीसँ आबू बड़ आस कराबै छी
पूरा होयत कखन ‘मनु’ मनोकामना
हमरा किए नहि करेजसँ लगाबै छी

24

दुनिया नहि पुछलकै केहनो बात नहि
राखू हियामे ई तेहनो बात नहि
चिन्है छै समाज सगरो धनीकेकेँ
‘मनु’केँ जँ जाइ बिसरि एहनो बात नहि

25

तोरा नहि हम छोड़लौं नहि हम बेवफा
तोरा बिन नहि मरलौं नहि हम बेवफा
तोहर प्राण गेल बुझि नहि जीवैत 'मनु'
बिन काठीए जड़लौं नहि हम बेवफा

26

आपस कऽ दे ओ हमरा हमर बितल दिन
किरया तोरा द दे ओ सगर बितल दिन
रहि जाएब आब असगरे तोरा बिन
नहि यादि करब संगे तोहर बितल दिन

27

छी हम जरैत की अहाँ प्रकाशित रही
सुख लेल अहाँक हम खुशीसँ आँच सही
बातीकेँ जरैत ई दुनिया देखलक
बनि तेल हम जरलौं दुख अपन की कही

28

पागल हम दुनियामे पियार तकै छी
भलमानुस सब सगर वेपार तकै छी
नहि कोनो दाम मनुख आ मनुखताकेँ
स्वार्थी लोकसँ 'मनु' सरोकार तकै छी

29

पपनी मोरै नहि आँखि यादे अहाँक
जीवन बहुते अन्हार बादे अहाँक
दिन राति चलैत अछि हमर करेजामे
छवि एककेँ बाद एक मादे अहाँक

30

जिनका देलौं करेजा ओ वेपारी
मोनसँ खलेलनि जनि कऽ हमर लाचारी
हम रहि सिधा साधा सज्जन बेचारी
ओ पहुँचल फेरल बड़ पैघ खेलाड़ी

31

सगरो मैथिली साहित्य दहकैत अछि
नव नव विधाक आँच आइ पजरैत अछि
कोटी नमन जिनकर बिछल जारैन अछि
बारल आगि विदेहक 'मनु' लहकैत अछि

32

सिस्टम आइकेँ किए बबाल बनल अछि
नेता सभ तँ एकटा जपाल बनल अछि
बड़ बड़ बागर बिल्ला राज चलबैए
जनताक प्राणेपर सबाल बनल अछि

33

गामक अधिकारी भेला सैंया हमर
कोना कS पकड़तै कियोक बैंया हमर
पेटीक माल सभक आब हमरे छैक
सैंया लS लेथिन सभटा बलैंया हमर

34

नैन्हेंटा हाथमे केहन लकीड़ छै
नै माय बाप ई केहन तकदीर छै
धो धो कऽ ऐँठ कप लकीड़ो खीएलै
नै सुनलक कियो ई दुनियाँ बहीर छै

35

अभिमन्यु जकाँ चक्रव्यूहमे फसलहुँ
कोना आब बचब नहि कृष्ण बनि पयलहुँ
जीवन केर एहि महाभारतमे 'मनु'
चहुदिस ठाढ़ भेल कौरवकेँ देखलहुँ

36

जे जन्म देलन्हि ओ कहलन्हि गदहा
जे पोसलन्हि ओ मानलन्हि गदहा
गदहा जँका सगरो जिन्दगी बितेलहुँ
जिनका बियाहलहुँ ओ बुझलन्हि गदहा

37

मुँह पर दरद आबि जेए ओ मरद नै
जे हर बहैत बसि जेए ओ बरद नै
जिम्मेदारी घरक ल गेल विदेशमे
केना 'मनु' बुझलक जेए ओ दरद नै

38

कोना मरि-मरि क हम रुपैया कमेलहुँ
सुख चैन निन्न रातिकेँ अपन हरेलहुँ
घर गामक सबटा सऽर संबंध तियागि
बाहर बिन दोषकेँ वनवास बितेलहुँ

39

ढोलक धम-धमा-धम बजैत किएक छै
घुंघरू खन-खना-खन नचैत किएक छै
भीतरसँ छैक दुनू एक्केसन खाली
संजोगसँ दुनू नहि बुझैत किएक छै

40

अनकर घर जड़ा हाथ सेकै सभ कियो
दोसरकेँ करेजा तोरि हँसै सभ कियो
अपनापर जँ बिपति आबि गेलै कखनो
माथा पकड़ि हिचुकि-हिचुकि कनै सभ कियो

41

घाटे-घाट बैसल कतेको गोहि छै
साउध लोककेँ मोन लेने मोहि छै
धर्मक नामसँ खुजलै कतेको दुकान
टाका लऽ छनमे सभटा पाप धोहि छै

42

हमहूँ आइ खेतमे बोटी रोपलहुँ
पोसै लेल पेट झूठक हर जोतलहुँ
कारी कोटसँ कोटमे निसाफ ककरा
टाका पाबि आँखि बान्हि दफा जोखलहुँ

जगदानन्द झा 'मनु'

जन्म:	13 नवम्बर 1973
पिता:	स्वर्गीय राज कुमार झा
माता:	श्रीमती मंजू देवी
शिक्षा:	बिजनेसमे स्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालयसँ। इलेक्ट्रानिक्स आ कम्पयूटर हार्डवेयरमे डिप्लोमा।
वृति:	प्रोफेसनल नेटवर्कर आ बिजनेस लीडर
पैतृक गाम:	हरिपुर डीहटोल, मधुबनी
वर्तमान निवास:	ग्रेटर नोएडा, दिल्ली एनसीआर
सम्पर्क:	+91 92124 61006,
ई पत्र:	jagdanandjha@gmail.com

प्रकाशित कृति:

- ❑ चोनहा (बाल उपन्यास) 2012 इस्वीमे
- ❑ तोहर कतेक रंग (बीहनि कथा संग्रह), 2021 इस्वीमे
- ❑ नढ़िया भुकैए हमर घराड़ीपर (बहरयुक्त गजल संग्रह), 2022 इस्वीमे
- ❑ व्यथा (कविता आ गीत संग्रह) 2025 इस्वीमे
- ❑ आखर आँखि (हाइकू संग्रह) 2026 इस्वीमे
- ❑ जीवनदान (अनूदित कथा संग्रह) 2026 इस्वीमे
- ❑ सिनेह आखर (गजल आ रुबाइ संग्रह) 2026 इस्वीमे

पल्लवी प्रकाशन
नेहरू मार्ग, तुलसी भवन, निर्मली,
जिला- सुपौल, बिहार: 847452

मूल्य- 299/-

ISBN: 978-93-48865-86-1
9 789348 865861